International Journal of Aquatic Science
ISSN: 2008-8019
Vol 13, Issue 01, 2022

छत्तीसगढ़ राज्य के धार्मिक नगरी शिवरीनारायण अंचल का ऐतिहासिक अनुशीलन (छत्तीसगढ़ के संदर्भ में)

Dr. Pradeep Kumar Kesharwani[1] Aastha Pandey[2]

[1]Research Guide, Department of History, Kalinga University, Naya Raipur, Raipur Chhattisgarh
[2]Research Scholar, Department of History, Kalinga University, Naya Raipur, Raipur Chhattisgarh

दामाखेड़ा (तीर्थस्थल व धार्मिक स्थल)

भौगोलिक परिदृष्य

दामाखेड़ा छत्तीसगढ़ के भौगोलिक स्थिति के अनुसार 21.6265^{0}N ′81.7056^{0}E/पर स्थित है। जो जिला मुख्यालय बलौदाबाजार–भाटापारा से लगभग 72 किमी. की दूरी पर स्थित है।

खोज के विषय का विवरण

दामाखेड़ा छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर के समीप व जिला बलौदाबाजार – भाटापारा में कबीरपंथियों, की एक तीर्थस्थल है। यह बलौदाबाजार जिले के सिमगा से 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक छोटा सा ग्राम है। यह कबीर पंथियों के आस्था का सबसे बड़ा केन्द्र माना जाता है। यहां देश दुनिया से श्रद्धालु दर्शन के लिए आते है। यह एक अत्यन्त दर्शनीय धार्मिक केन्द्र है।

ऐसा माना जाता है कि आज से 100 वर्ष पूर्व यहां कबीरपन्थ के 12 वें गुरू गुरू गुरू अग्रनाम साहेब द्वारा कबीर मठ की स्थापना की गयी थी। तथा समाधि स्थल के समीप ही कबीर कुटिया एवं भवन निर्माण किया गया है। इसमें कविताएं दोहे एवं चौपाई आदि बड़े ही कलात्मक रूप लिखे गए है। अतः– यह अत्यन्त प्राचीन स्थल माना जाता है। तथा पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। यहाँ से लोगों की धार्मिक आस्था भी जुड़ी है। अतः कबीरपंथियों में इस स्थान का विशेष महत्व है।

यहाँ कबीरपंथ के संत समागम में मेले का आयोजन किया जाता है। यह कबीर पंथियों के तीर्थस्थल के रूप में अत्यन्त प्रसिद्ध है। यहां पर देश–विदेश से श्रद्धालु दर्शन के लिए आते है।

कबीर पंथ, कबीर की शिक्षाओं पर आधारित एक संत मत और दर्शन हैं। यह मुक्ति के साधन के रूप में सच्चे सतगुरू के रूप में उनकी भक्ति पर आधारित है इसके अनुयायी कई धार्मिक पृष्ठीाूमि से है क्योंकि कबीर ने कभी भी धर्म परिवर्तन की वकालत नहीं की बल्कि उनकी सीमाओं पर प्रकाश डाला। कुछ विद्वानों के अनुसार, यह परम्परा सर्वभौमिकतावादी झुकाव वाले वैष्णववाद से संबंधित है। कबीर के संबंध में, उनके अनुयायी प्रकट उत्सव मनाते है।

कबीर पंथ का छत्तीसगढ़ के जनजीवन में व्यापक प्रभाव है, इसलिए यहाँ के लोग शांतिप्रिय है। दामाखेड़ा कबीर पंथियों का बहुत बड़ा समागम स्थल हैं। यहाँ एक प्राचीन तालाब भी स्थित है। प्रत्येक वर्ष की भांति माघ पूर्णिमा में यहाँ विश्वप्रसिद्ध मेले का आयोजन किया गया था, जिसमें मुख्यमंत्री द्वारा यहाँ पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु अनेक सौगातों की घोषणा की गयी थी।

<u>रामपुर</u> (सिद्धेष्वर महादेव)

भौगोलिक परिदृष्य

'रामपुर'' छत्तीसगढ़ के भौगोलिक स्थिति के अनुसार 21.5914^{0}N '82.24753^{0}E/पर स्थित है। जिसकी जिला मुख्यालय बलौदाबाजार – भाटापारा से दुरी लगभग 22 कि.मी. है।

खोज के विषय का विवरण

जिला मुख्यालय सीमा से बिलासपुर रोड पर महज 22 किमी. दूर शिवनाथ नदी के किनारे रामपुर गांव में प्राचीन शिव मंदिर स्थित है। यह शिव में मंदिर अत्यन्त प्राचीन है। इसके बारे में गांव के बुजुर्गो को भी कोई जानकारी नहीं है। यहां की प्रतिमाएं भी अत्यन्त प्राचीन थी। परन्तु दुर्भाग्य की बात है। रखरखाव व उचित शासकीय व्यवस्था के अभाव में प्राचीन प्रतिमाएं चोरी हो गयी। कुछ मिली परन्तु कुछ अप्राप्त है।

इसी रामपुर में 25 दिसम्बर 2002 को एक चरवाहे प्रहलाद यादव को जमीन पर कुछ गोल पत्थर दबा दिखाई दिया उसकी खुदाई पर वहॉ पर एक शिवलिंग प्राप्त हुआ। जिसकी स्थापना कर एक शिवमंदिर का निर्माण किया गया है। जिसमें श्रावण मास में भारी संख्या में श्रद्धालु शिवलिंग पर जल अर्पित करने हेतु एकत्रित होते है।

चूंकि यह स्थान अत्यन्त विकसित नहीं है। यह शिवनाथ नदी के तट पर स्थित है तो यहॉ प्राकृतिक दृश्य भी रमणीय है। इस स्थान को प्राचीन व पर्यटक स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है। जिससे अधिक से अधिक सैलानी इसका आनंद ले पाएं व शिव जी के दर्शन का लाभ ले सकें।

यहाँ पर शिवनाथ नदी के तट पर दृश्य अत्यन्त ही मनमोहक रहता हैं। यहाँ पर छोटे–छोटे मंदिरो का निर्माण किया गया है। एक प्राचीन मंदिर भी स्थित है। परन्तु यह स्थान अत्यन्त रमणीय व मनोरम दृश्यों से परिपूर्ण है। परन्तु विकास का अभाव परिलक्षित होता है। व प्राचीन मंदिर में विकास का अभाव भी दिखाई पड़ता हैं। इस स्थान को एक बहुत ही अच्छे पर्यटक स्थल के रूप में विकसित किया जाना चाहिए। स्थानीय निवासियों से यह भी जानकारी प्राप्त हुई है कि यहाँ प्राचीन मंदिर के पीछे एक कुआं है, जिसमें एक सुरंग है जो बहुत पहले राजाओं द्वारा बनवाया गया थ, परन्तु वह अब बंद हो चुका है। इससे यह स्पष्ट होता है कि यह बहुत ही प्राचीन स्थलों मे से एक है। तथा प्रकृति का अद्भूत नजारा देखने को मिलता है।

सिंगारपुर

भौगोलिक परिदृष्य

''सिंगारपुर' छत्तीसगढ़ के भौगोलिक स्थिति के अनुसार 21.7371^{0}N '82.9473^{0}E/पर स्थित है। जिसकी जिला मुख्यालय बलौदा बाजार – भाटापारा से दूरी लगभग 34 कि.मी. है। तथा राजधानी रायपुर से 75 कि.मी. की दूरी पर स्थित हैं।

खोज के विषय का विवरण

यह अभ्यारण्य, बलौदाबाजार जिले में स्थित, जो 245 वर्ग किलोमीटर कें क्षेत्रफल में फैला हुआ हैं। इसे वन्य जीव अभ्यारण्य के रूप में 1972 में वन्यजीव अधिनियम के तहत घोषित किया गया था। परन्तु यह अभ्यारण्य के रूप में 1976 में अस्तित्व में आया। यह अभ्यारण्य समूचित पहाड़ी क्षेत्र का मिश्रण है जो 265 मी. से 400 मी. के क्षेत्र में फेला हुआ है। बारनवापारा का नाम अभ्यारण्य के हृदय स्थल पर बसे दो अन्य ग्रामो बार व नवापारा पर आधारित है। इसका कुछ क्षेत्र महासमुंद जिले में भी स्थित है। जो इस जिले के उत्तरी भाग पर आता है। इस अभ्यारण्य में चार सिंग वाले हिरण, बाघ, तेंदुए, जंगली भैसे,

अजगर बारसिंग हिरण हाइना साही चिकारा व ब्लेंक बॉस आदि पाये जाते है। तथा पक्षियों में बगुले, बुलबुले, इरगेट्स और तोता आदि की कई प्रजातियां देखी जा सकती है।

यह वन क्षेत्र शुष्क पर्णपाती पेड़ो और विभिन्न प्रकार के वृक्षों से समृद्ध है। जिसमें तेंदु, बीर, सेमल, साक, टीक और बेल शामिल है।

बारनवापारा वन्यजीव अभ्यारण्य अपने हरे भरे वनस्पति व अद्वितीय वन्य जीवन के लिए प्रसिद्ध है। बालमदेही नदी व जोंक नदी, अभ्यारण्य से होकर बहती है। इसमें 22 वन्यग्राम है। इसके अंतर्गत निम्न दर्शनीय स्थल आते है।

जो इस प्रकार है :– 1. तुरतुरिया 2. देवधारा 3. छाता पहाड़ 4. मातागढ 5. तेलईधारा 6. कुरूपाठ 7. देवपुर पहाड़ी 8. सिद्धखोल।

परन्तु नई सुविधाओं के अभाव में इस अभ्यारण्य कर सुंदरता से देश–विदेश के सैलानी वंचित है। इनके और विकास से यह देश विदेश के लिए रमणीय पर्यटक स्थल के रूप में विकसित होगा।

चंगोरी पुरी धाम

भौगोलिक परिदृष्य

चंगोरी पुरी धाम छत्तीसगढ़ राज्य के भौगोलिक स्थिति के अनुसार 21.6429^{0}N 82.3384^{0}E पर स्थित है। जो जिला मुख्यालय बलौदाबाजार –भाटापारा से लगभग 17 किमी. दूरी पर स्थित है।

खोज के विषय का विवरण

यह स्थान बलौदाबाजार क्षेत्र के लवन पोस्ट आफिस के अन्तर्गत आता जो बलौदाबाजार से लगभग 17 कि.मी. दूरी पर स्थित है। यह धाम शिवनाथ नदी के तटपर स्थित है। यहाँ कबीर पंथियों का आश्रम स्थित है। इस स्थान को अत्यन्त प्राचीन जो नहीं कह सकते परन्तु यह एक अच्छा पर्यटन स्थल हैं। चूंकि इस क्षेत्र की जानकारी अत्यधिक लोगों को ना होने के कारण यह विकसित नहीं हो पाया है। परन्तु यहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता अत्यन्त रमणीय है यहाँ कबीर पंथियो के द्वारा मेले का आयोजन किया जाता है। यह इनका पवित्र स्थल माना जाता है।

इस स्थान की मुख्य निशेषता यह है कि यह तीन नदियों शिवनाथ महानदी और लीलागर नदी के संगम पर बसा हुआ है। यह चंगोरी ग्राम में स्थित है। इसलिए इसका नाम चंगोरी पुरी धाम पड़ा। यहाँ प्रतिवर्ष माघ माह में मेले का आयोजन किया जाता हैं यहाँ के स्थानीय मछुवारों द्वारा नौका विहार का भी लुफ्त उठाया जा सकता है। तथा यहाँ की प्राकृतिक छटा का आनंद लिया जा सकता है।

अतः यह क्षेत्र प्राचीन व प्रसिद्ध स्थलो में से एक है। नदी के किनारे पर एक प्राचीन शिव मंदिर स्थित है। यह मंदिर बहुत पहले से उस मंदिर का निर्माण बहुत किया गया था परन्तु विकास के अभाव में यह ज्यादा विकसित नही हो पाया है। जिससे इस क्षेत्र के विषय में बहुत लोगों का संगम है जो अत्यन्त ही मनोरम दिखाई पड़ता है। यहाँ पर्यटक नौका –विहार का भी आनंद ले सकते है। यहाँ की हरियाली व प्राकृतिक दृश्य बहुत ही मनमोहक है। परन्तु यह क्षेत्र आज भी विकास की राह देख रहा है। अतः स्पष्टतः यह स्थान अत्यन्त प्राचीन व रमणीय स्थलों में से एक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. छत्तीसगढ़ का इतिहास (विकिपीडिया)।
2. "Inde-du-Nord – Madhya Pradesh, Chhattisgarh 2019-07-03 at the wayback Machine" Lonely planet 2016; ISBN
3. "Pratiyogita Darpan, 2019-07-02 at the wayback Machine" ; July 2007.
4. https:// balodabazar.gov.in
5. 36–खबर–News